सादगी व सफाई (गंभीरता और सभयता)

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{१} मुस्लिम; रावी हज़रत इबने अब्बास रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने कबील-ए-अब्दुल कैस के वफ्द के लीडर को (जिन का लकब अशज था) फरमाया तुम्हारे अन्दर दो ऐसी खूबियां पाई जाती है जो अल्लाह को पसन्द है, और वो है सबर और गंभीरता व सभयता. अब्दुल कैस का जो वफ्द आप ﷺ के पास आया था उसके और आदमी तो मदीना पहुंचते ही आप ﷺ से मुलाकात के लिये दौड पडे, ना नहाए ना हाथ मूंह धोया और ना अपने सामान को ठीक से कहीं जमाया, हालांकि दूर से आये थे, गर्द व गुबार मै अटे थे, उनके विपरीत उनके लीडर ने जल्दबाजी का कोई काम ना किया, इतमीनान से उतरे, सामान को ढंग से रखा, सवारियों को दाना पानी दिया फिर नहा धो कर गंभीरता के

साथ आप ﷺ की खिदमत मै हाजिर हुवे.

{२} अबू दाउद; रावी हज़रत अबू उमामा रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया सादा जिन्दगी गुजारना ईमान मै से है. यानी सादा हालत मै जिन्दगी गुजारना मोमिन मोमिना खुबियों मै से है, उसे तो अपनी आखिरत बनाने और संवारने की फिक्र होती है, उसको दुनियावी सजावटों से कोई दिलचस्पी नहीं होती है.

{३} मिश्कात; रावी हज़रत जाबिर रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ मुलाकात की गर्ज से हमारे यहां तशरीफ लाये तो आप ﷺ ने एक आदमी को देखा जो धुल और मिटटी अटा हुआ था और बाल बिखरे हुये थे, आप ﷺ ने फरमाया क्या इस आदमी के पास कोई कंघा नहीं है जिस से ये अपने बालों को ठीक कर लेता? और आप ﷺ ने एक दूसरे आदमी को देखा जिस ने मैले कपडे पहन रखे थे, आप ﷺ ने फरमाया क्या इस आदमी के पास वो चीज (साबुन वगैरा) नहीं है जिस से ये अपने कपडे धो लेता.

{४} मिश्कात; रावी हज़रत अता बिन यसार रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم मस्जिद मै थे की इतने मै मस्जिद मै एक आदमी दाखिल हुआ जिस के सर और दाढी के बाल बिखरे हुये थे तो रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने हाथ से उस की तरफ इशारा किया, जिस का मतलब ये था की जाकर अपने सर के बाल और दाढी को ठीक करो, चुनाचे वो गया और बालों को ठीक करने के बाद आया तो आप ने फरमाया क्या ये बेहतर नहीं है इस बात से की आदमी के बाल उलझे हुये हो एकसा मालूम होता हो की गोया वो शैतान है.

{५} मिश्कात

खुलासा- अबुल अहवस अपने वालिद (पिता) से रिवायत करते है उनके वालिद ने कहा की मै रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم की खिदमत मै हाजिर हुआ उस वकत मेरे बदन के कपडे मामूली और घटिया थे, आप صلى الله عليه وسلم ने पूछा क्या तुम्हारे पास माल है? मैने कहा हां, आप صلى الله عليه وسلم ने पूछा कीस तरह का माल है? मैने कहा हर तरह का माल अल्लाह ने मुझे दे रखा है, उंट भी है, गायें भी है, बकरियां भी है, घोडे भी है, और गुलाम भी है,

आप ﷺ ने फरमाया जब अल्लाह ने माल दे रखा है तो उसके फजल व एहसान का असर तुम्हारे जिस्म पर जाहिर होना चाहिये था. मतलब ये की जब अल्लाह ने सब कुछ दे रखा है तो अपनी हैसियत के मुताबिक खाओ, पहनो, ये क्या की आदमी के पास घर मै तो सब कुछ हो, लेकीन हालत ऐसी बनाये की वो गरीब लगे, ये बुरी आदत है ये अल्लाह की नाशुक्री है.